अतिथि संपादक की कलम से.....

त्रिलोक सिंह ठकुरेला

बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बाल साहित्य बहुत आवश्यक है। बाल साहित्य विशेष रूप से बच्चों के लिए लिखा जाने वाला साहित्य है। अतः अच्छा बाल साहित्य वह है, जो रोचक होने के साथ साथ बच्चों को सहज रूप से सीखने सिखाने में मदद करे, उनकी कल्पनाशीलता और रचनात्मकता में वृद्धि करे, उनमें नैतिक मूल्यों का विकास करे, बच्चों को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध करे। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि बाल साहित्य की भाषा सरल और स्पष्ट हो। आकर्षक चित्रण होने से बाल साहित्य और अधिक शोभनीय हो जाता है। बाल साहित्य बच्चों के भाषा कौशल के विकास में सहयोगी होता है। बाल साहित्य उन्हें शिक्षित करने के साथ साथ उन्हें सामाजिक और भावनात्मक रूप से विकसित करने में मदद करता है।

बाल साहित्य की अनेक विधाएँ हैं, जिनमें बाल काव्य, बाल कहानी, बाल उपन्यास, बाल एकांकी, बाल नाटक, बाल पहेली आदि प्रमुख हैं। बाल काव्य में मुख्यतः बाल कविता और बाल गीत बच्चों में अधिक लोकप्रिय हैं। बाल कविताएँ बच्चों का मनोरंजन तो करती ही हैं, साथ ही साथ ये कविताएँ बच्चों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हुए उन्हें सहज रूप से अपने परिवेश से परिचित कराती हैं। बच्चों में अच्छे संस्कारों का बीज विपणन करती हैं। बाल कविताएँ बच्चों के शब्द ज्ञान में वृद्धि करते हुए उनकी शब्द सम्पदा में भी वृद्धि करती हैं। श्रेष्ठ बाल कविताएँ बच्चों को आदर्श नागरिक बनाने में अद्वितीय भूमिका निभाती हैं।

बाल साहित्य लेखन बहुत ही जिम्मेदारी और कौशल का कार्य है। अतः बाल साहित्य के नाम पर कुछ भी लिख देना उचित नहीं है। सही बाल साहित्य वही है, जो बच्चों में साहित्य के प्रति ललक पैदा करने में सक्षम हो और उन्हें कुछ सकारात्मक सिखाते हुए उनका ज्ञानवर्धन करे। 'धरोहर' में प्रतिष्ठित रचनाकारों की बाल कविताएँ देने के पीछे मेरी यह विचारधारा है कि ऐसा करने से उन महान साहित्यकारों के लिए अपनी श्रद्धा और सम्मान व्यक्त कर सकेंगे और उनके उत्कृष्ट सृजन से समकालीन रचनाकार और बाल पाठक परिचित हो सकेंगे। 'धरोहर' के रूप दी गयी रचनाएँ प्रभावशाली और गेय तो हैं ही, वे बच्चों में कविता के प्रति ललक पैदा करने में सक्षम हैं। ये मनोहर और मुदित करने वाली बाल कविताएँ नि:संदेह बच्चों के लिए उपयोगी हैं। समकालीन साहित्यकारों की बाल-मन के अनुकूल सृजित बाल कविताओं को लेकर मैं पूर्णतः आश्वस्त हूँ कि ये कविताएँ बच्चों को आनन्दानुभूति कराते हुए उन्हें सकारात्मक भावों से भरने में सक्षम हैं।

साहित्य रत्न पत्रिका का यह अंक बाल कविता विशेषांक होने के नाते बच्चों को ही समर्पित है। बच्चे राष्ट्र का भविष्य हैं और मेरा यह विश्वास है कि साहित्य रत्न का यह अंक बच्चों का भविष्य संवारने में अपनी सार्थक भूमिका निभायेगा। 'बाल कविता' विशेषांक की ये कविताएँ बच्चों का मनोरंजन करने के साथ साथ उनके सीखने सिखाने में सहायक होंगी। ये कविताएँ बच्चों की कल्पनाशक्ति को नयी ऊँचाइयों पर ले जाते हुए उन्हें सुखद अनुभूति करायेगी। मेरा यह भी विश्वास है कि साहित्य रत्न का यह अंक बच्चों को भावी श्रेष्ठ नागरिक बनाने में अपनी सकारात्मक भूमिका निभायेगा।